बच्चों के लिए सुन्दर सचित्र कहानियों की पुस्तकों
एवम्
शैक्षिक पुस्तकों के प्रकाशक ।

ड्रीमलैण्ड
पब्लिकेशन्स

विशेष लाइब्रेरी संस्करण 1989,
मूल्य 8-00 रु.

प्रकाशक :
ड्रीमलैण्ड पब्लिकेशन्स
4425, नई सड़क, दिल्ली-110006
फोन : 2915831, 2929770

कला निर्देशक : अमीत केशू
गणेश गोपाल

संपादक : तीर्थ राम भनोट

Processing :- Best Photo Lithographers

Printer :- DEWAN OFFSET PRINTERS (P) LTD

पंचतन्त्र

kissekahani.com

भाग 2

प्रकाशक :

ड्रीमलैण्ड पब्लिकेशन्स

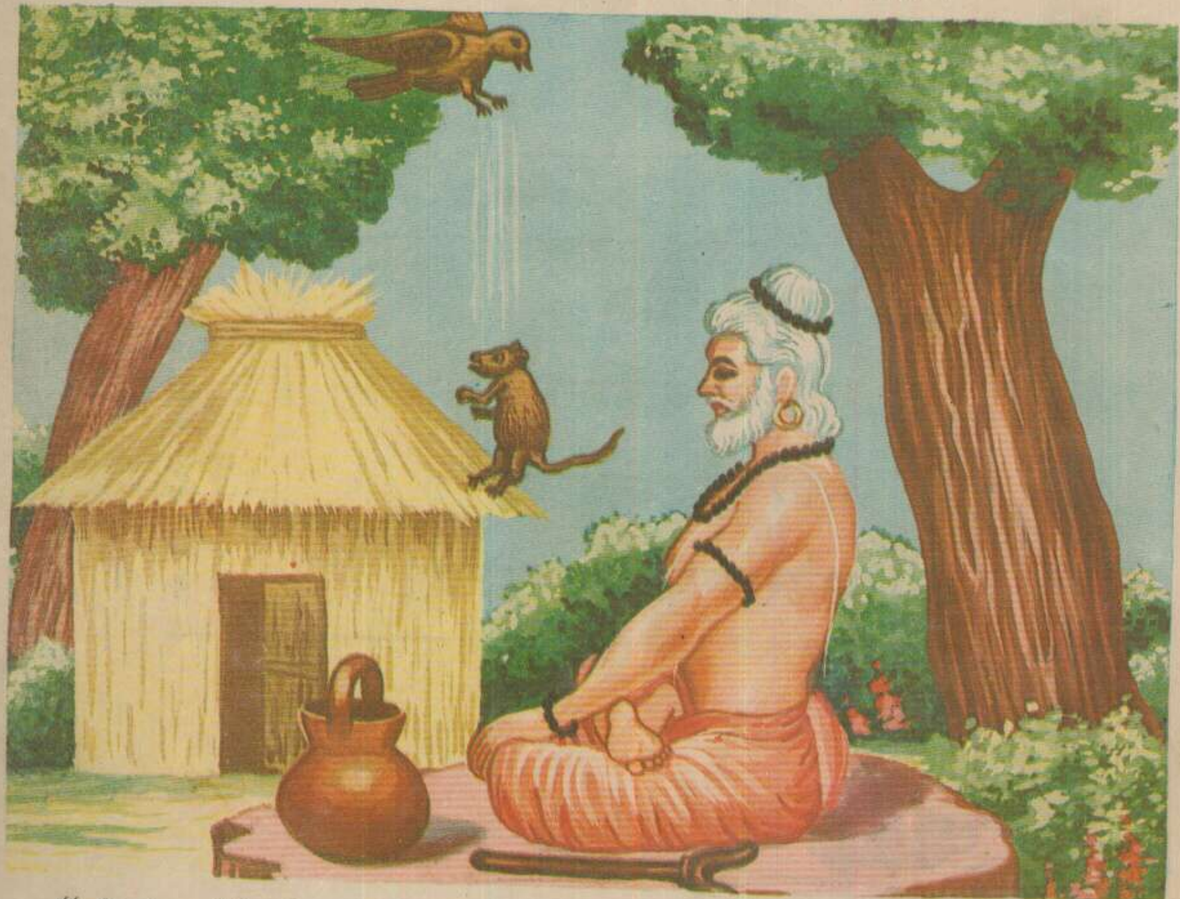
4425, नई सड़क, दिल्ली-110006

फोन : 2915831, 2929770

वर की खोज

बहुत समय पहले गंगा के किनारे एक आश्रम था जिसमें साधु-महात्मा रहते थे । उन सन्त महात्माओं के गुरु थे – सन्त वेदानन्द जी महाराज ! वे एक सिद्ध पुरुष थे । उन्होंने अपनी तंत्र साधना से लोगों को कितने ही चमत्कार दिखाये थे ।

एक दिन की बात है कि वेदानन्द जी अपनी कुटी के आगे बैठे साधना में लीन थे । तभी एक बाज़ अपने पंजों में किसी चूहे के बच्चे को दबाये उनके ऊपर होकर गुज़रा । संयोग से वह चूहे का बच्चा बाज़ के पंजों से छूटकर सन्त वेदानन्द की गोद में जा गिरा ।



"हरि ओ३म् !" – वेदानन्द का ध्यान भंग हो गया । उन्होंने जब आँख खोली तो अपनी गोद में पड़ी नन्ही-सी चुहिया को देखकर उन्हें दया आ गई । उन्होंने मन्त्र-बल से उस चुहिया को एक सुन्दर कन्या बना दिया ।

वह उस कन्या को लेकर अपनी पत्नी मंदाकिनी के पास पहुंचे और बोले – "लो मंदाकिनी ! तुम्हें सन्तान की बहुत चाह थी ; वह हम ले आये हैं तुम्हारे लिए । अब तुम इस लड़की को पाल-पोस कर एक मां का धर्म पूरा करो ।"

"आप किसी बात की चिन्ता न करें, स्वामी । मैं इस कन्या को अपनी पुत्री की तरह पालूंगी ।" – मंदाकिनी उस कन्या को पाकर बड़ी खुश हुई । उसने कन्या का नाम कान्ता रख दिया ।

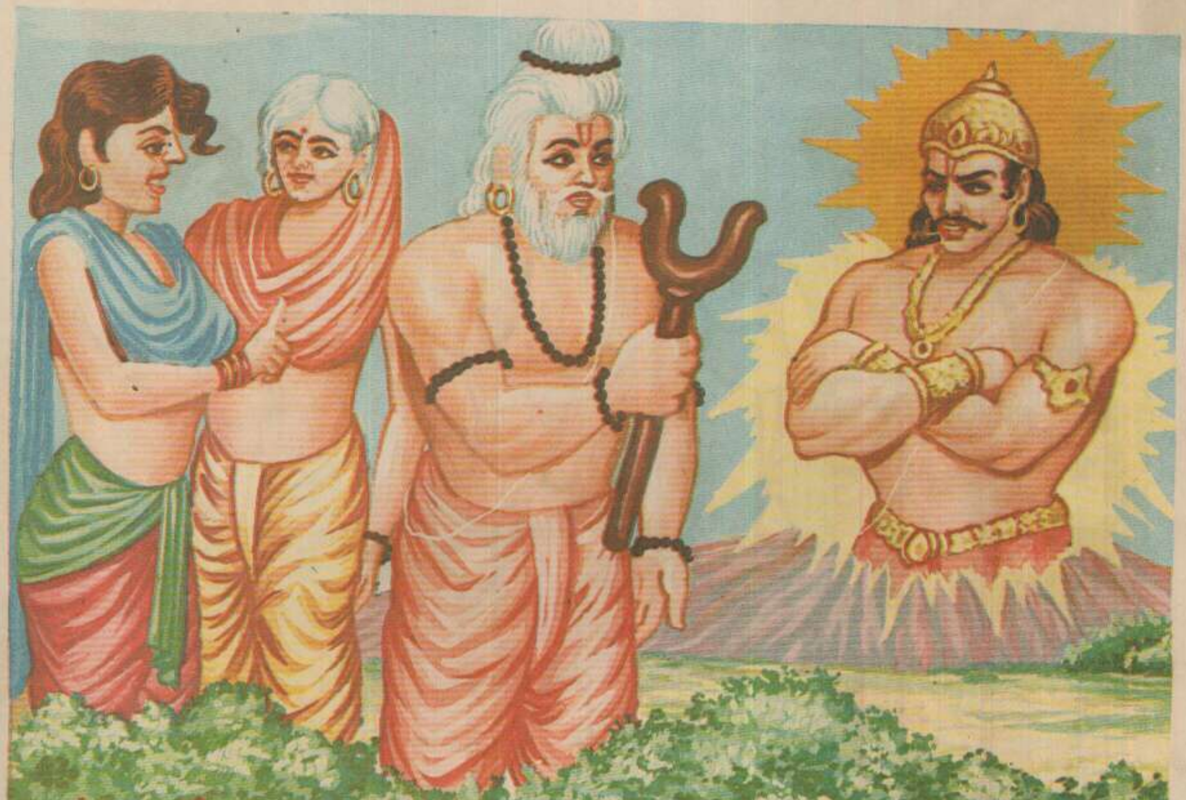
कान्ता दूज के चांद की तरह बढ़ने लगी और देखते ही देखते सोलह वर्ष की हो गई ।

तब मंदाकिनी ने अपने पति से उसके विवाह की चर्चा की और कहा – "स्वामी ! कान्ता अब विवाह योग्य हो गई है । आप कोई अच्छा सा वर खोज कर कन्या के भार से मुक्ति प्राप्त करें।"

"तुमने अच्छे समय पर याद दिलाया । हम अपनी बेटी के लिए अभी सूर्य देवता का आवाहन करते हैं ।" इतना कहकर सन्त वेदानन्द ने सूर्य देवता का आवाहन किया ।

थोड़ी ही देर में सूर्य देवता पृथ्वी पर उतर आये और बोले – "कहिए मुनि श्रेष्ठ ! आपने किस लिए हमें बुलाया है ?"

"भगवन ! मेरी बेटी कान्ता विवाह योग्य हो गई है । इसलिए मैं चाहता हूं कि आप मेरी बेटी का वरण कर उसे पत्नी बना लें ।"



कान्ता उस समय अपनी मां के पास ही खड़ी थी । वह सूर्य का लाल मुख देखकर सहम गई और बोली "नहीं पिताजी ! मैं इनके साथ कदापि विवाह नहीं करूंगी । इनका तो हर समय मिजाज गर्म

रहता है । इनकी नज़र पड़ने पर तो कठोर पत्थर भी मोम बन कर पिघल जाता है – फिर मेरी क्या बात ? मैं तो जल कर राख हो जाऊंगी ।"

बेटी की बात से सन्त वेदानन्द के दिल को बड़ा आघात पहुंचा । जब बेटी ही शादी के लिए तैयार नहीं थी तो वह क्या कर सकते थे ? उन्होंने सूर्य देवता से कहा, "अब आप ही इसके लिए कोई ऐसा वर बतायें, भगवन, जो आपसे भी श्रेष्ठ हो ।"

"मुझसे बड़ा तो बादल है, मुनिश्रेष्ठ । क्योंकि जब वह मुझे ढक लेता है तो मेरा प्रकाश कम हो जाता है । आप उससे अपनी बेटी का विवाह कर दें ।" ऐसा कहकर सूर्य भगवान अपने धाम को चले गए ।

तब सन्त वेदानन्द ने बादल का आवाहन किया । मंत्र के बल से बादल तुरन्त पृथ्वी पर उतर आया और बोला, "कहिये मुनिवर ! आपने हमें कैसे याद किया ?"

"मेघराज ! मेरी बेटी संसार में सबसे सुन्दर किशोरी है। मैं इसका विवाह आपके साथ करना चाहता हूं । आप इस सम्बन्ध को स्वीकार कर लीजिए ।"



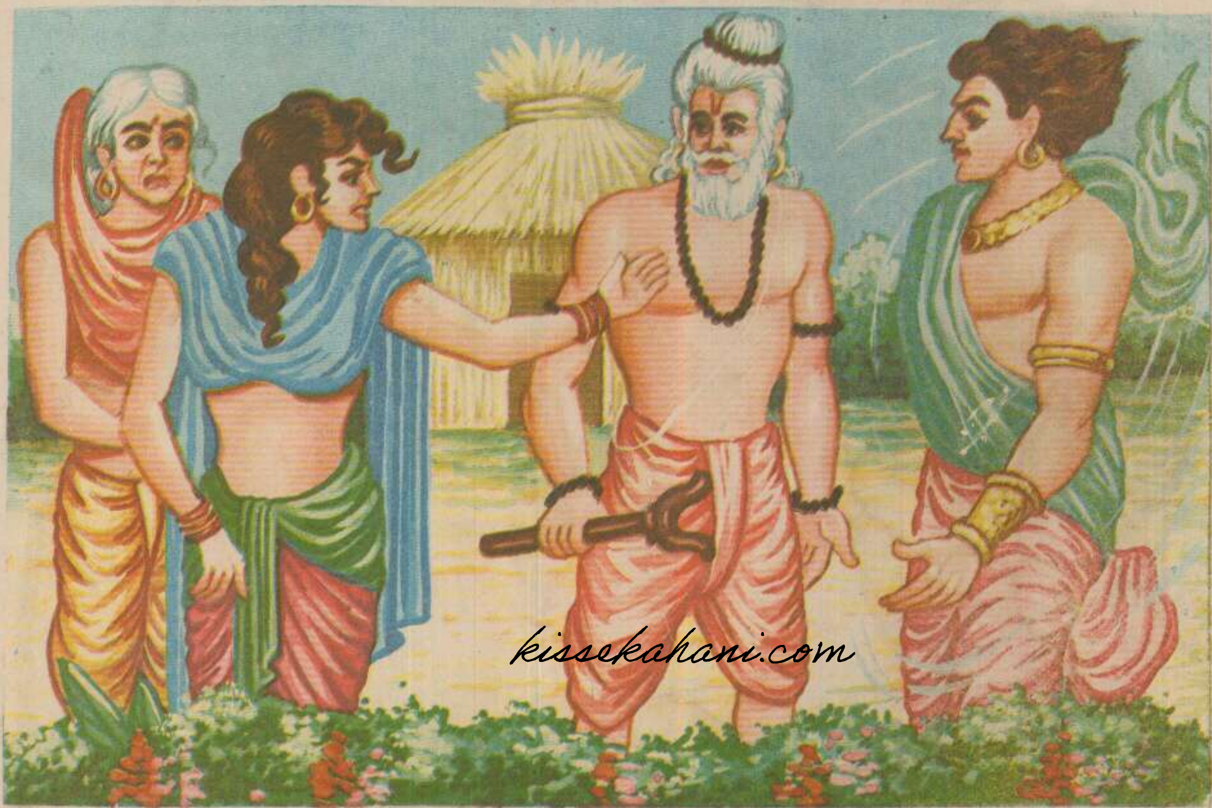
इससे पहले कि बादल कुछ कहता, कान्ता बाल उठी, "पिताजी ! मैं इनके साथ भी विवाह नहीं करूंगी । इनका तो पूरा शरीर काला और आवाज राक्षसों जैसी भयावनी है । इसलिए आप मेरे लिए कोई दूसरा वर तलाश करिये ।"

तब सन्त वेदानन्द ने उदास होकर कहा, "घन देवता ! अब आप ही कोई योग्य वर बतायें ।"

"ऐसा वर तो पवनदेव हैं, मुनिराज ! उन्हीं में इतना बल है कि वह जहां चाहें मुझे उड़ा ले जायें। इसलिए आप अपनी बेटी का विवाह पवनदेव के साथ कर दें । इतना कहकर बादल वहां से उड़ गया ।

सन्त वेदानन्द ने फिर तुरन्त अपने मंत्रयोग से पवनदेव को बुलाया और कहा, "हे पवनदेव ! आप मेरी बेटी का वरण कीजिए ।"

यह सुनते ही कान्ता आगबबूला हो उठी और बोली, "ठहरिये पिताजी ! मैं इस आवारा घुमक्कड़ के साथ विवाह नहीं करूंगी ।"



अपनी बेटी के इस व्यवहार से सन्त वेदानन्द बड़े दुःखी हुए और बोले – "मैं अपनी बेटी के व्यवहार से बहुत शर्मिन्दा हूं, देव ! अब आप ही इसके लिए कोई अच्छा वर बतायें ।"

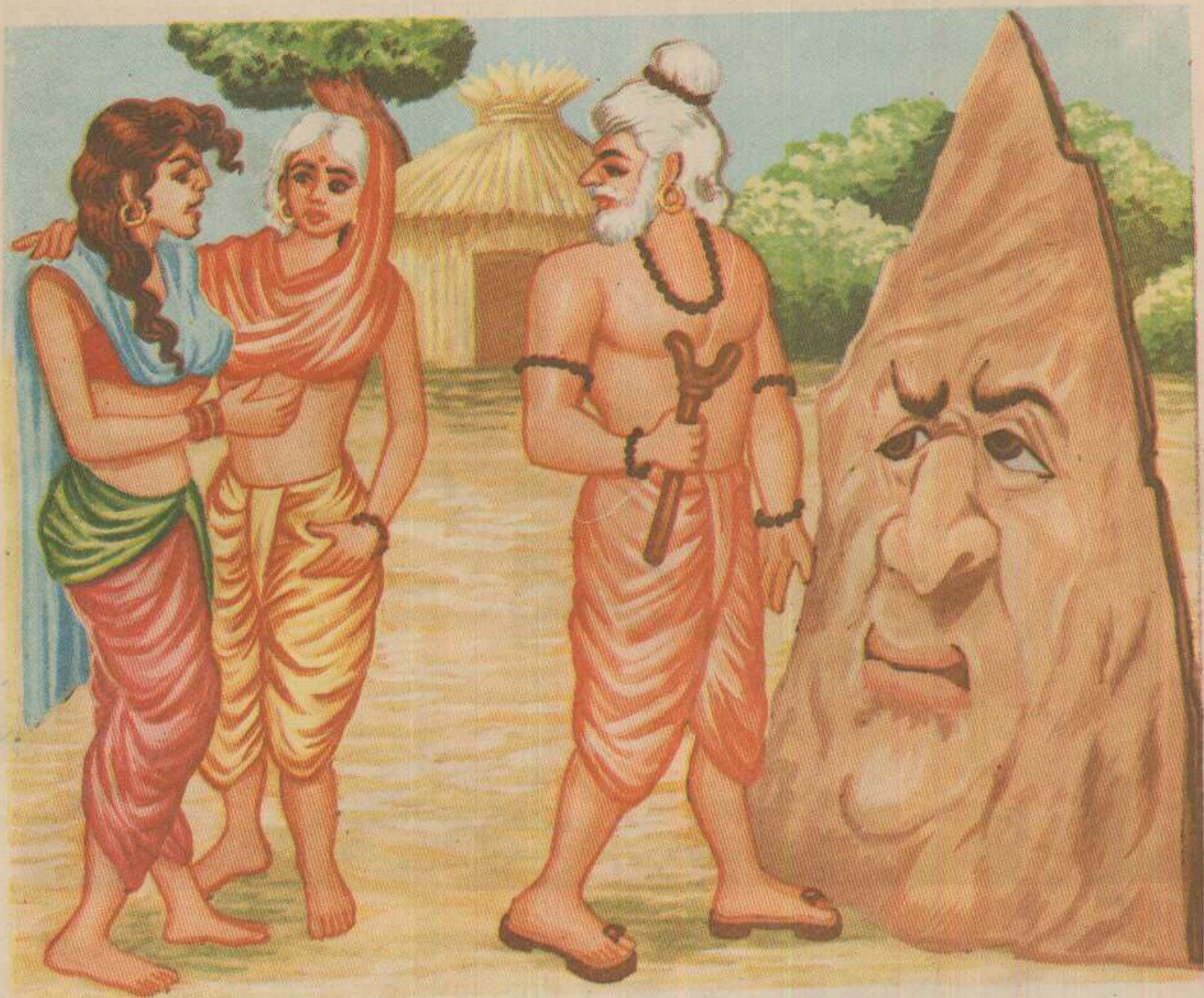
"ऐसा वर तो मुनिश्रेष्ठ पर्वतराज ही हैं । मैं कितने ही वेग से चलूं, वह अपनी जगह से टस से मस नहीं होता। इसलिए आप अपनी बेटी का विवाह पर्वतराज के साथ कर दें ; अच्छा रहेगा ।" ऐसा कहकर पवनदेव भी वहां से चले गए ।

तब वेदानन्द ने पर्वतराज को बुलाया और कहा, "पर्वतराज । आप विश्व में सबसे ऊंचे और महान हैं । इसलिए मैं आपके साथ अपनी बेटी का विवाह करना चाहता हूं ।"

किन्तु कान्ता ने पर्वतराज को देखते ही नाक-भौंह सिकोड़ ली और कहा, "मैं ऐसे कठोर-हृदय व्यक्ति के साथ कभी विवाह नहीं करूंगी, पिताजी । मैं तो कोमल हृदय वाले व्यक्ति के साथ विवाह करना चाहती हूँ ; चाहें वह देखने में छोटा ही क्यों न हो ।"

"मुझे क्षमा करें, पर्वतराज ! मैंने बेकार ही आपको कष्ट दिया । लेकिन आप दया करके कोई दूसरा वर बतायें जो कोमल और सुयोग्य हो ?" – सन्त वेदानन्द ने निराश होकर कहा ।

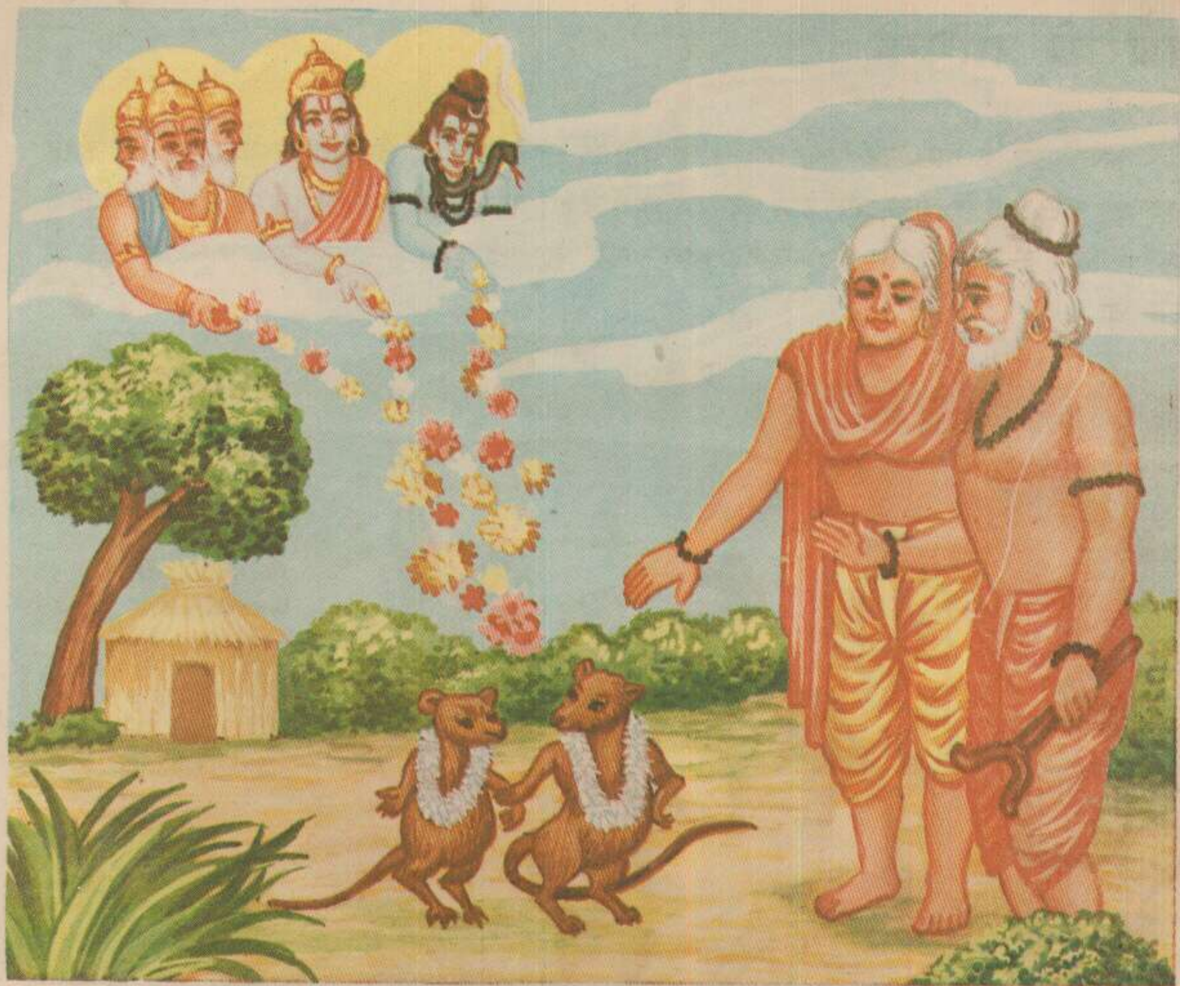
"आप निराश न हों, मुनिश्रेष्ठ ! मुझसे बड़ा तो इस दुनियां में सिर्फ एक ही जीव है – चूहा,जो



मुझे भी अन्दर से खोखला कर देता है । वही इस कन्या के लिए उपयुक्त वर है ।" – इतना कहकर पर्वतराज वापस अपने धाम को लौट गये ।

तब सन्त वेदानन्द ने चूहे को अपने पास बुलाया ।

चूहा सन्त वेदानन्द के आवाहन पर तुरन्त दौड़ा चला आया । उसे देखकर कान्ता एकदम उछल पड़ी और बोली, "पिताजी ! यही तो है मेरे लायक वर जिसकी मुझे तलाश थी । आप इन्हीं से मेरा विवाह कर दीजिए ।"



सन्त वेदानन्द मुस्कराये और बोले, "बेटी ! यह सच है कि मैंने अपने मंत्रबल से तेरा रूप तो बदल दिया परन्तु तेरा भाग्य न बदल सका । यही विधि का विधान है ।" ऐसा कहकर वेदानन्द ने अपने मंत्र-बल से कान्ता को फिर चुहिया बना दिया और चूहे के साथ उसका विवाह कर दिया ।

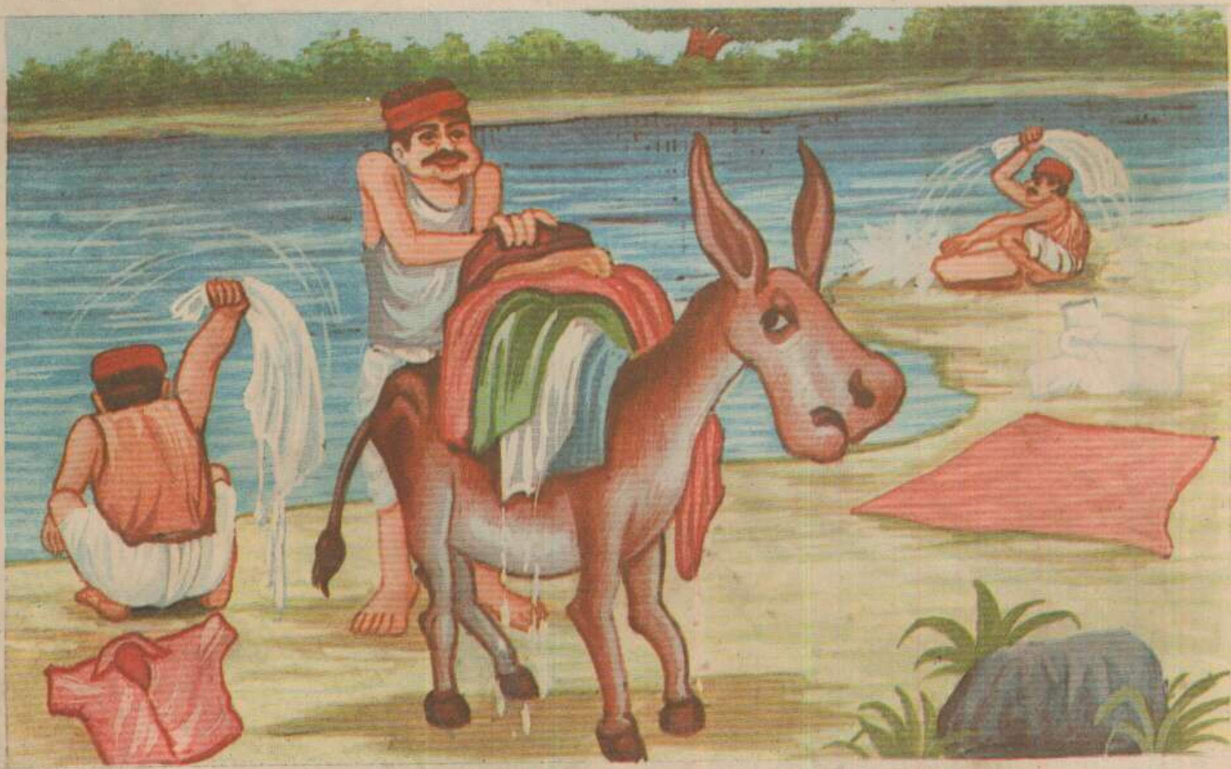
दोनों हँसी-खुशी वहां से चले गये ।

शिक्षा – किसी का रूप बदल जाने से उसका भाग्य नहीं बदल जाता । भाग्य का लिखा तो अमिट है । इसलिए तकदीर से लड़ना व्यर्थ है ।

यही इस कहानी का सार है ।

गधे की रागिनी

कालू धोबी के पास एक गधा था । गधा बूढ़ा हो चला था फिर भी धोबी उसकी पीठ पर कपड़े लाद कर घाट तक ले जाता और शाम को घाट से धुले हुए कपड़े लाद कर उसे ले आता । इतनी कड़ी मेहनत करने के बाद भी गधे को भर-पेट भोजन नहीं खिलाता था । इसीलिए गधा बहुत कमज़ोर हो गया था ।



किन्तु कालू धोबी उस गधे पर इतनी दया जरूर करता था कि वह रात को उसे खुला छोड़ देता था ताकि वह दूसरों के खेतों में चर कर अपना पेट भर ले ।

एक रात गधा जब सैर कर रहा था तो उसकी भेंट एक सियार से हो गई । सियार भी दुनियां में अकेला था । अतः दोनों में दोस्ती हो गई । दोनों फक्कड़ दोस्त रात में निकलते और बड़ी देर तक सैर सपाटा करते रहते ।

एक रात जब दोनों घूमने के लिए निकले तो अचानक टमाटरों के खेत में जा पहुंचे । खेत में खूब टमाटर लगे हुए थे । इसलिए दोनों ने भरपेट टमाटर खायें । वे टमाटर उन्हें इतने अच्छे लगे कि हर रात्रि को वे टमाटर खाकर ही अपना पेट भरने लगे ।

रोज-रोज पके टमाटर खाने से गधा मोटा-ताज़ा बन गया । उसे अब हंसी की बातें सूझने लगीं । लगीं ।



एक दिन रात को गधा टमाटर खाकर मस्त हो उठा और बोला – "आहा ! कैसी चांदनी खिली हुई है ?" ठण्डी-ठण्डी मस्त हवा भी चल रही है । ऐसे सुहावने मौसम में मेरा मन तो गाने को कर रहा है ।"

"न भई न ! ऐसा ग़जब न करना वरना । तुम्हारी सुरीली और मीठी आवाज़ सुनकर खेत वाले दौड़े आयेंगे और हमारी पिटाई करने लगेंगे । चोर की भलाई इसी में होती है कि चोरी करे और चुपचाप खिसक ले ।" – सियार ने कहा ।

लेकिन गधे को सियार की बात अच्छी नहीं लगी । वह बोला – "बड़े डरपोक हो यार ! रखवाले हमारा क्या बिगाड़ लेंगे । मैं तो अवश्य गाऊंगा । कभी-कभार ही तो मन गाने को करता है – उसे भी मार के बैठ जाऊं ?"

"लेकिन दोस्त, तुम्हारी आवाज कौन-सी सुरीली है जो लोग सुनकर मोहित हो उठेंगे ।"

"अरे मूर्ख ! तुम क्या जानो कि सुरीली आवाज कैसी होती है ? तुम्हारे वंश में कभी किसी ने संगीत विद्या सीखी है ? तुम तो संगीत का क, ख, ग भी नहीं जानते । अरे ! मेरी आवाज तो पंचम स्वर मानी जाती है ।"

"हाँ जी ! तुम कहते तो सही हो । लेकिन इस समय तो मेरी बात मानों और अपनी गाने की जिद छोड़ दो वरना खेत वाले तुम्हें ऐसा इनाम देंगे कि सारी जिन्दगी याद रखोगे ।"

"तुम रहे गीदड़ के गीदड़ ! तुम्हें गाना नहीं आता इसलिए तुम मुझे भी गाने से रोक रहे हो । पर मैं तो गाऊंगा । लो, सुनो – मैं तुम्हें राग भैरवी सुनाता हूँ ।" – इतना कहने के बाद जब गधा गाने के लिए तैयार हुआ तो सियार बोला, "ठहरो यार ! पहले मुझे खेत से बाहर हो जाने दो, फिर तुम अपनी तान छेड़ना । मैं बाहर खड़ा तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा ।" यह कहकर सियार खेत से बाहर निकल कर एक पेड़ के नीचे छुप कर खड़ा हो गया ।

उधर गधे पर गाने का भूत सवार था ही – इसलिए वह अपनी गर्दन ऊपर उठाकर जोर से रेंकने लगा – 'ची पों... ढेंचू... ढेंचू ।"



गधे की आवाज जब खेत वालों के कानों में गूंजी तो वे डण्डे लेकर दौड़ पड़े ।

गधा अपनी धुन में रेंकता चला जा रहा था । यह देखकर वह लोग उसपर टूट पड़े और उस पर बेतहाशा डण्डे बरसाने लगे । गधा निढाल होकर जमीन पर गिर पड़ा ।

तब खेत वाले उसके गले में ऊखल बांधकर वहां से चले गये । उनके चले जाने के बाद गधा लंगड़ाता हुआ खेत से बाहर निकला ।

खेत के बाहर सियार उसकी राह देख रहा था । गधा जब उसके पास पहुंचा तो सियार उसके गले में बंधे ऊखल को देखकर बोला – "बधाई हो दोस्त ! खेत वालों ने तुम्हारे गाने पर प्रसन्न होकर



तुम्हें स्वर्णपदक प्रदान किया है ।"

इस बात पर गधे की गर्दन शर्म से झुक गई । उसने धीमे स्वर में कहा, "मुझे अब और शर्मिन्दा न करो, मित्र ! तुम्हारी अच्छी सलाह न मानने का ही तो मुझे यह फल मिला है ।"

"मामा ! हर चीज़ उचित समय पर ही अच्छी लगती है । तुम अच्छा गाते हो मगर गाने का भी कोई समय होता है । यह नहीं कि जब चाहे गाने बैठ जाओ – न पड़ोसियों का ख्याल और न दुनियांदारी का ।"

"तुम ठीक कहते हो भांजे ! मैं तुम्हारी यह सीख हमेशा याद रखूंगा !" यह कहकर गधा खामोश हो गया ।

शिक्षा – बच्चो ! कभी-कभी छोटों की बातें भी महत्त्वपूर्ण और उपयोगी होती हैं । इसलिए बड़ों को उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए ।

यही इस कहानी का सार है ।

साँप और नेवला

बहुत वर्ष पहले माधव नाम का एक किसान बेलापुर गांव में रहता था । वह बड़ा सीधा और सरल स्वभाव का व्यक्ति था । उसके परिवार में केवल तीन प्राणी थे – उसकी पत्नी राधा, दूसरा वह स्वयं और तीसरा उसका तीन मास का नन्हा-सा प्यारा बेटा ।

एक शाम जब वह अपने खेतों से काम करके लौट रहा था तो उसकी नज़र रास्ते में पड़े हूए नेवले के बच्चे पर पड़ गई । वह उस बच्चे को उठा कर अपने घर ले आया ।

"यह क्या ले आये ?" माधव की पत्नी राधा ने पूछा ।



"नेवले का बच्चा है । रास्ते में मिल गया इसलिए मुन्ना के खेलने के लिए उठाकर ले आया ।" माधव ने उत्तर दिया ।

दिन बीतते गये ... और इस तरह से आठ मास बीत गये । दोनों बच्चे बड़े हो गये, किसान का भी और नेवले का भी । अन्तर सिर्फ़ इतना था कि माधव का बेटा अभी भी पालने में पड़ा झूलता रहता था जबकि नेवले के बच्चे ने घर में उछल-कूद मचाना शुरू कर दिया था ।

फिर एक दिन राधा ने अपने पति से कहा, "सुनो ! आज गांव में बाज़ार लगा है । मैं पड़ोस की औरतों के साथ घर का सामान खरीदने जा रही हूं । तुम ज़रा मुन्ना का ख्याल रखना । वह अन्दर झूले में सो रहा है ।"

"तुम क्यों चिन्ता करती हो ? मैं चला भी गया तो अपना नेवला जो है ।"

"उसी का तो डर लगा रहता है, मुझे । कहीं मुन्ना को अकेला पाकर काट न ले । जानवर ही तो है ।"



"राधा! जानवर आदमी से ज्यादा वफादार होता है। फिर भी अगर तुम कहती हो तो मैं तुम्हारे वापस आने तक कहीं नहीं जाऊंगा ।"

माधव का आश्वासन पाकर राधा बाज़ार चली गई

उसके जाने के थोड़ी ही देर बाद गांव के मुखिया का आदमी माधव को बुलाने के लिए आ गया और बोला, "माधव भैया ! तुम्हें मुखिया जी ने अभी बुलाया है । शायद कोई ज़रूरी काम है ।"

"ठीक है । तुम थोड़ी देर बैठो । राधा सामान खरीदने बाज़ार गई है । वह आती ही होगी । फिर मैं तुम्हारे साथ चला चलूंगा ।"

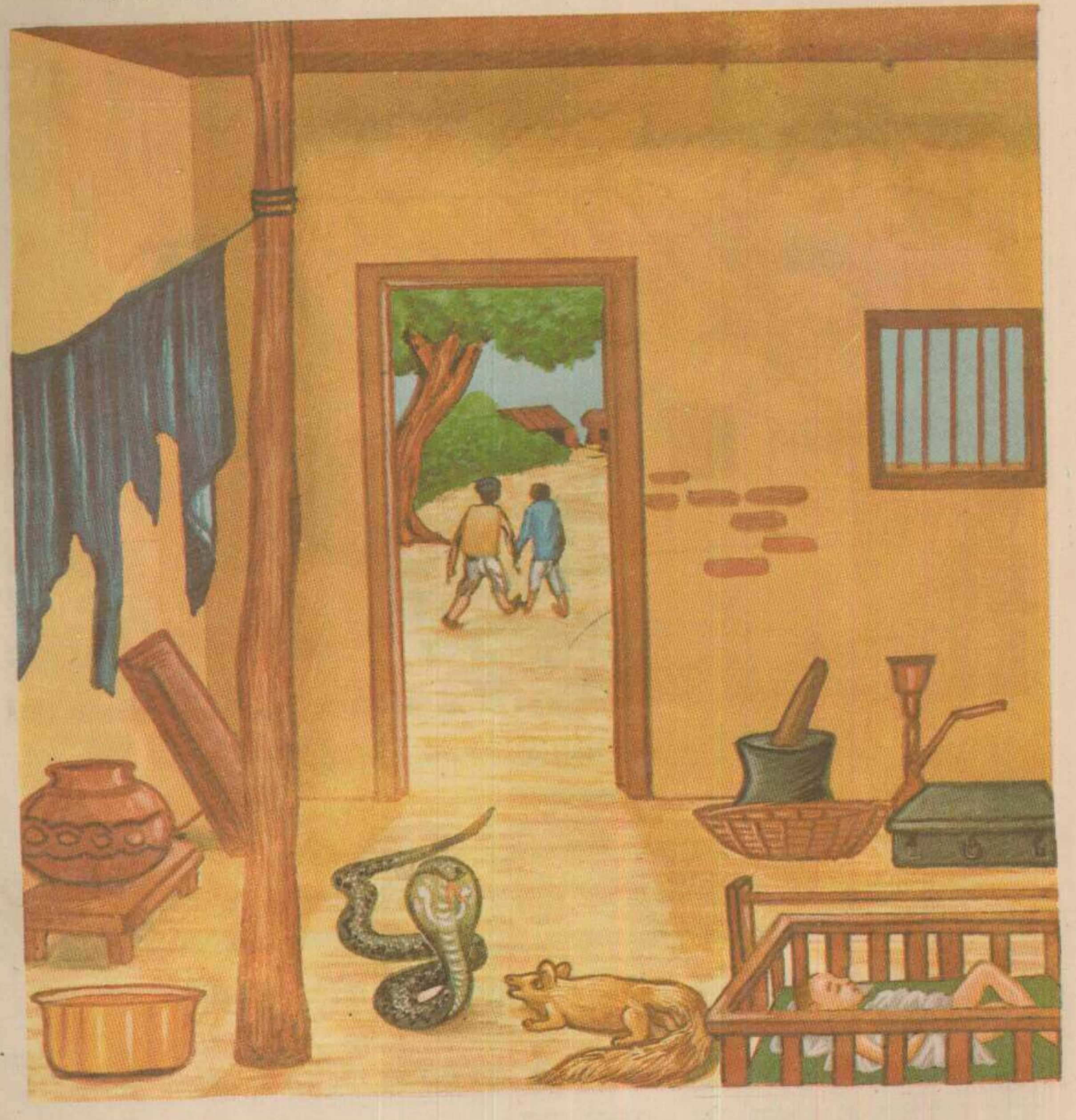
"लेकिन भैया ! मुखिया जी ने तो कहा था कि आप जैसे बैठे हों, वैसे ही बुला कर ले आना ।" माधव बड़ी द्विविधा में फँस गया । सोचने लगा –

'अब मैं क्या करूं । मुखिया का बुलावा है ; मना भी नहीं कर सकता । पता नहीं, क्या ज़रूरी काम है ?' यह सोचकर वह बच्चे को अकेला छोड़ उस आदमी के साथ चला गया ।

तभी न जाने कहां से एक काला नाग माधव के घर में घुस आया । वह धीरे-धीरे रेंगता हुआ उसके बच्चे की ओर बढ़ने लगा । सहसा साँप की गंध पाकर कमरे के बाहर बैठा नेवला तेज़ी से

कमरे की ओर दौड़ा । साँप को देखते ही वह बच्चे के झूले और नाग के बीच दीवार बन कर खड़ा हो गया ।

नेवले को देखकर साँप डर गया और वहां से भागने के लिए लौट पड़ा । लेकिन नेवले ने उसे



भागने का कोई मौका नहीं दिया और तेज़ी से उसपर झपट पड़ा ।

साँप भी नेवले पर वार करने लगा । कुछ देर तक दोनों में द्वन्द्व युद्ध होता रहा परन्तु अन्त में नेवले ने साँप के तीन टुकड़े कर दिये । उसके बाद वह कमरे से बाहर निकल गया । लड़ाई में नेवले के पंजे और मुख साँप के खून से लथपथ हो गये ।

थोड़ी देर बाद जब राधा बाज़ार से सामान लेकर लौटी तो कमरे से बाहर निकलते नेवले को देखकर चौंक पड़ी क्योंकि उसका मुख और दोनों पंजे खून से लथपथ थे । उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा । मन में बुरी-बुरी शंकाएं उठने लगीं । उसने आव देखा न ताव एक पत्थर उठाकर नेवले के सिर पर दे मारा और बोली, "अरे कम्बख्त ! यह तूने क्या किया ? मेरे बेटे को मार डाला ! क्या यही हमारे उपकार का बदला दिया तूने ?"

... और फिर बाज़ार से खरीदा सामान वहीं पटक कर वह तेज़ी से चिल्लाती हुई कमरे की ओर भागी, "हाय मेरा मुन्ना !"



वह जब कमरे के अन्दर पहुंची तो वहां का दृश्य देखकर हैरान रह गई । झूले में उसका बच्चा सो रहा था और उसके पास ही एक काला नाग मरा पड़ा था ।

फिर तो राधा को यह समझते देर न लगी कि यह काला नाग ज़रूर उसके बेटे को डसने आया होगा पर नेवले ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए ।

नेवले का ध्यान आते ही राधा उलटे पांव कमरे से बाहर दौड़ी । वह जब नेवले के पास पहुंची तो नेवला दम तोड़ चुका था । उसे अपने किये का पश्चाताप होने लगा और बोली, "हाय ! यह मैंने क्या कर डाला ? अपने बेटे के प्राण रक्षक के प्राण ले लिये । हे भगवान ! तुम मेरे इस अपराध को कभी

माफ़ न करना और मुझे मेरी करनी की कड़ी से कड़ी सज़ा देना ।"

राधा का करुण विलाप सुनकर पास-पड़ोस के लोग भी वहां इकट्ठे हो गये उन्होंने जब घटना सुनी तो वह भी सब नेवले की वफ़ादारी की प्रशंसा करने लगे ।



उसी समय माधव भी मुखिया के घर से लौट आया । उसे नेवले के मर जाने का दुःख हुआ वह बोला, "हर मां को अपना बेटा प्यारा होता है, राधा ; पर तुम तो इस नेवले की भी मां थीं । अपने हाथों से तुमने इसे पाल-पोस कर बड़ा किया था, फिर तुमने उसके प्राण क्यों ले लिए ?"

"मुझे माफ़ कर दो, स्वामी । मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई कि मैंने बिना सोचे-समझे नेवले पर शंका की और उसे मार डाला ।". – यह कहकर राधा ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी ।

"अब यह रोना-धोना छोड़ो और भविष्य के लिए एक बात याद रखो कि जो काम बिना सोचे-समझे किया जाता है, उसके लिए बाद में पछताना ही पड़ता है ।" माधव बोला ।

तब पति-पत्नी ने नेवले के बच्चे को दफ़ना दिया और माधव ने ईश्वर से प्रार्थना की, "हे ईश्वर ! इस नेवले की आत्मा को शान्ति देना और मेरी पत्नी को अनजाने में हुए अपराध के लिए क्षमा करना ।"

शिक्षा – बच्चो ! जो लोग बिना सोचे-विचारे काम करते हैं – उन्हें बाद में पछताना पड़ता है । इसलिए तुम जो भी काम करो, सोच-विचार कर करो ।

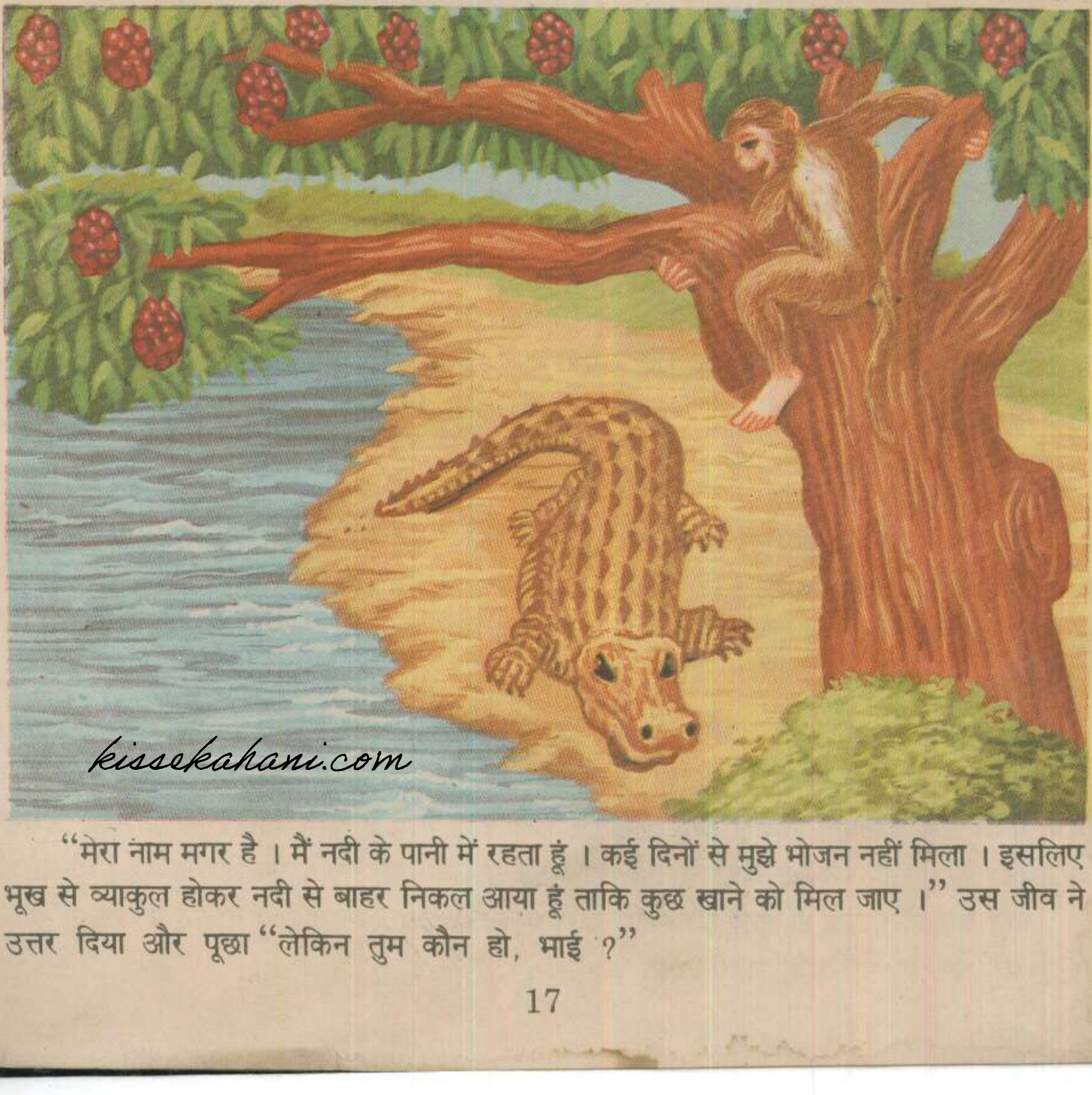
यही इस कहानी का सार है ।

मगरमच्छ की मूर्खता

वर्षों पहले सोनपुर के जंगलों में तरंग नामक एक नदी बहती थी । इस नदी में हर समय तरंगें उठती रहती थीं । इसी कारण इसका नाम तरंग नदी पड़ गया था । इस नदी के किनारे बरगद का एक घना वृक्ष था । वह बड़ा अद्‌भुत और चमत्कारी था । उसमें हर मौसम में अलग-अलग फल लगा करते थे जोकि बड़े स्वादिष्ट और मीठे होते थे ।

उस बरगद पर एक बन्दर रहता था । वह जी भरकर उन फलों को खाता था और नदी का ठण्डा जल पीकर चैन की बंसी बजाता था ।

एक दिन वह बन्दर खा-पीकर पेड़ की डाल पर लेटा हुआ था । सहसा उसकी नज़र नदी के किनारे पड़े एक अनोखे प्राणी पर पड़ गई । उसने उस प्राणी से पूछा "तुम कौन हो, भाई ; यहां क्यों पड़े हुए हो ?"



"मेरा नाम मगर है । मैं नदी के पानी में रहता हूं । कई दिनों से मुझे भोजन नहीं मिला । इसलिए भूख से व्याकुल होकर नदी से बाहर निकल आया हूं ताकि कुछ खाने को मिल जाए ।" उस जीव ने उत्तर दिया और पूछा "लेकिन तुम कौन हो, भाई ?"

बन्दर ने कहा, "कितनी अजीब बात है ? तुम्हें कई दिन से भोजन नहीं मिला और मैं खाते-खाते उकता गया हूं । देखो – इस वृक्ष पर कितने फल लगे हैं । सबके सब स्वादिष्ट और मीठे हैं । लो ! खाओ ।" इतना कहकर बन्दर ने पेड़ से कुछ फल तोड़ कर मगरमच्छ की ओर फेंक दिये ।



मगरमच्छ ने जब फलों को चखा तो बोला, "फल तो सचमुच बहुत मीठे हैं ।"

"अच्छा ! लो ओर खाओ," – बन्दर ने कुछ और फल तोड़ कर उसकी ओर फैंकते हुए कहा ।

कुछ देर के पश्चात् बन्दर फिर बोला, "मगर भैया ! तुम रोज़ यहां आया करो । मैं तुम्हारा फलों से पेट भर दिया करूंगा । इस वृक्ष पर फलों की क्या कमी है ? ईश्वर की कृपा से खूब फल लगते हैं ।"

और इस तरह बन्दर और मगरमच्छ में दोस्ती हो गई । दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति हमदर्दी और प्रेम पैदा हो गया ।

बन्दर इस दुनियां में अकेला था ; इसलिए उसे कोई न कोई साथ चाहिए था । अतः उसने मगरमच्छ से दोस्ती गांठ ली थी । लेकिन मगरमच्छ अकेला नहीं था । उसकी एक बहन भी थी ।

फिर एक दिन बातों ही बातों में मगरमच्छ ने बन्दर से कहा, "भइया ! मैं दुनियां में अकेला नहीं हूं । मेरे घर में मेरी एक प्यारी बहन भी है ।"

"अरे ! यह बात तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताई ? मैं अपनी बहन के लिए तुम्हें और फल दे देता । खैर, अब तुम रोज़ उसके लिए भी फल ले जाया करो ।" यह कहकर बन्दर ने बहुत-से फल तोड़ कर मगरमच्छ को दे दिये ।



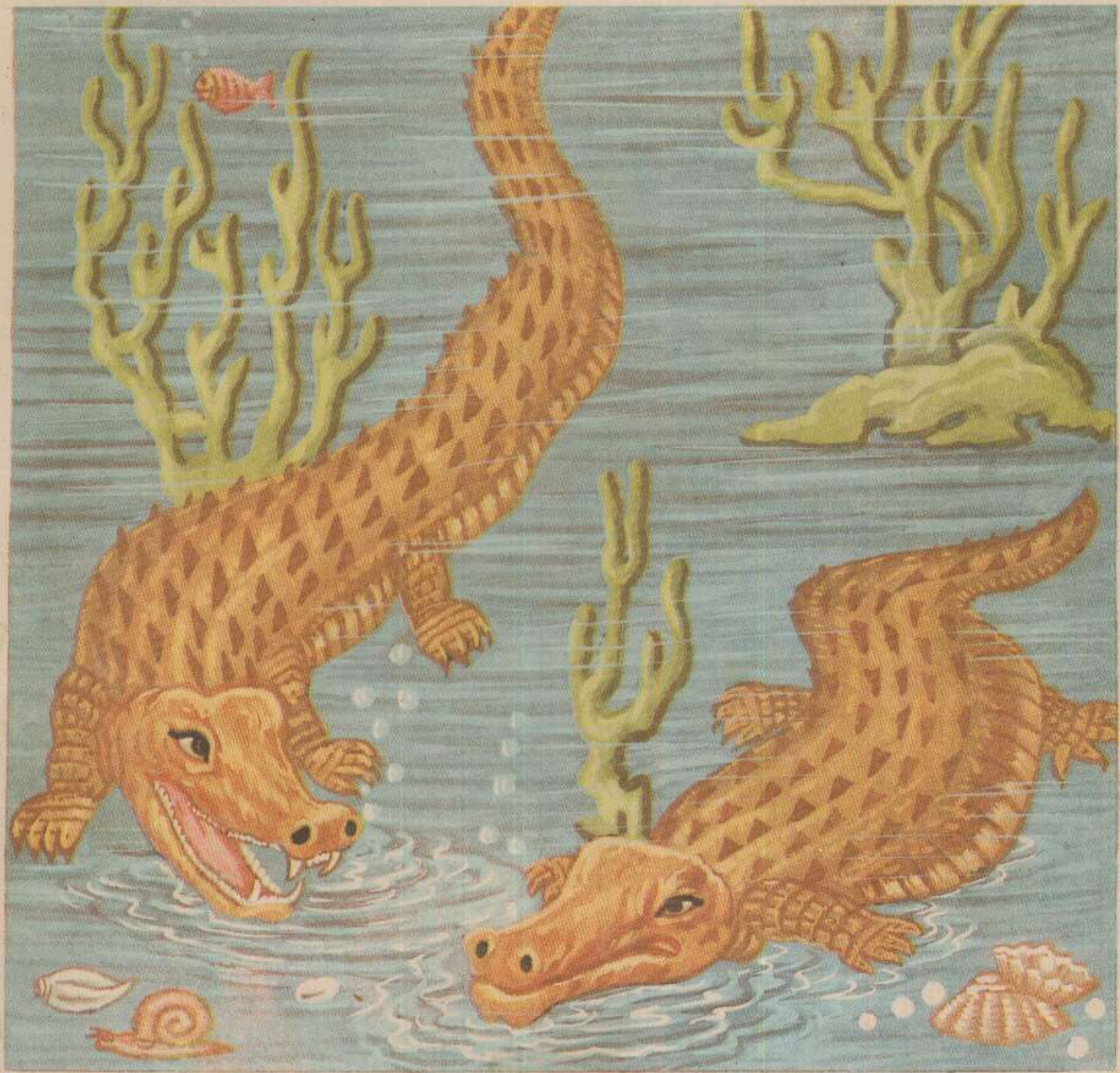
मगरमच्छ की बहन को भी वह फल बड़े स्वादिष्ट लगे ।

इस तरह मगर रोज़ अपनी बहन के लिए भी फल ले जाने लगा । लेकिन मगरमच्छ की बहन थी बड़े दुष्ट स्वभाव की । उसे यह विश्वास नहीं आ रहा था कि उसके भाई की दोस्ती सचमुच किसी बन्दर से हो गई है । इसलिए एक दिन वह अपने भाई से बोली – "भैया ! मुझे अभी तक यह विश्वास नहीं आ रहा कि तुम्हारी दोस्ती सचमुच बन्दर से हो गई है । क्योंकि तुम तो उसके बहुत पुराने शत्रु हो । भला अपने शत्रु को भी कोई अपना दोस्त बनाता है ?"

"बात तो तुम ठीक कहती हो, बहन । लेकिन यह सच है कि एक बन्दर मेरा मित्र है । वह बड़ा ही भोला और नेक-दिल बन्दर है । उसके मन में कोई छल-कपट नहीं है । इसीलिए वह मुझपर विश्वास करता है ।"

मगरमच्छ की बात सुनकर उसकी बहन खामोश हो गई किन्तु उसके मन में बन्दर के प्रति विष के अंकुर फूटने लगे। वह सोचने लगी– "जो बन्दर प्रतिदिन इतने मीठे फल खाता है, उसका मांस कितना मीठा और स्वादिष्ट होगा ? मुझे बहुत दिनों से मांस खाने के लिए मिला भी नहीं ।" ऐसा सोचकर उसके मुंह में पानी भर आया । उसका मन बन्दर का मांस खाने को ललचा उठा। लेकिन समस्या यह थी कि बन्दर का मांस वह खाये तो खाये कैसे ? बन्दर तो नदी के पार वृक्ष पर रहता था ।

मगरमच्छ ने जब अपनी बहन को पड़े देखा तो एकाएक चिन्तित हो उठा और बोला, "क्या बात है, बहन ? तेरी तबीयत तो ठीक है न ?"



"तुम्हें इससे क्या ? मैं मरूं चाहे जिऊं ? मैं तो अब एक दो दिन की मेहमान हूं ।"

"ऐसा न कहो, बहन ! तेरे सिवा मेरा इस दुनियां में और कौन है ? मुझे बता, तुझे क्या रोग है ? मैं उसकी अभी दवा ले आता हूं ।"

"मेरा यह रोग कोई मामूली नहीं है, भैया, जोकि दवा-दारू से ठीक हो जायेगा । इसके लिए तो मुझे किसी बन्दर का कलेजा चाहिए । तभी मेरा रोग ठीक हो पायेगा ।"

"बन्दर का कलेजा ! लेकिन वह कहां मिलेगा बहन ?"

"तुम्हारे मित्र से ! यदि तुम मुझे जिन्दा देखना चाहते हो तो अपने मित्र बन्दर का कलेजा लाकर मुझे खिलाना होगा । यही मेरे रोग की दवा है ।"

अतः उसने एक योजना तैयार की । वह अपने भाई से बोली – "भैया ! तुम बड़े स्वार्थी हो । बन्दर तुम्हारा प्यारा दोस्त है फिर भी तुमने कभी उसे अपने घर खाने पर नहीं बुलाया ।"

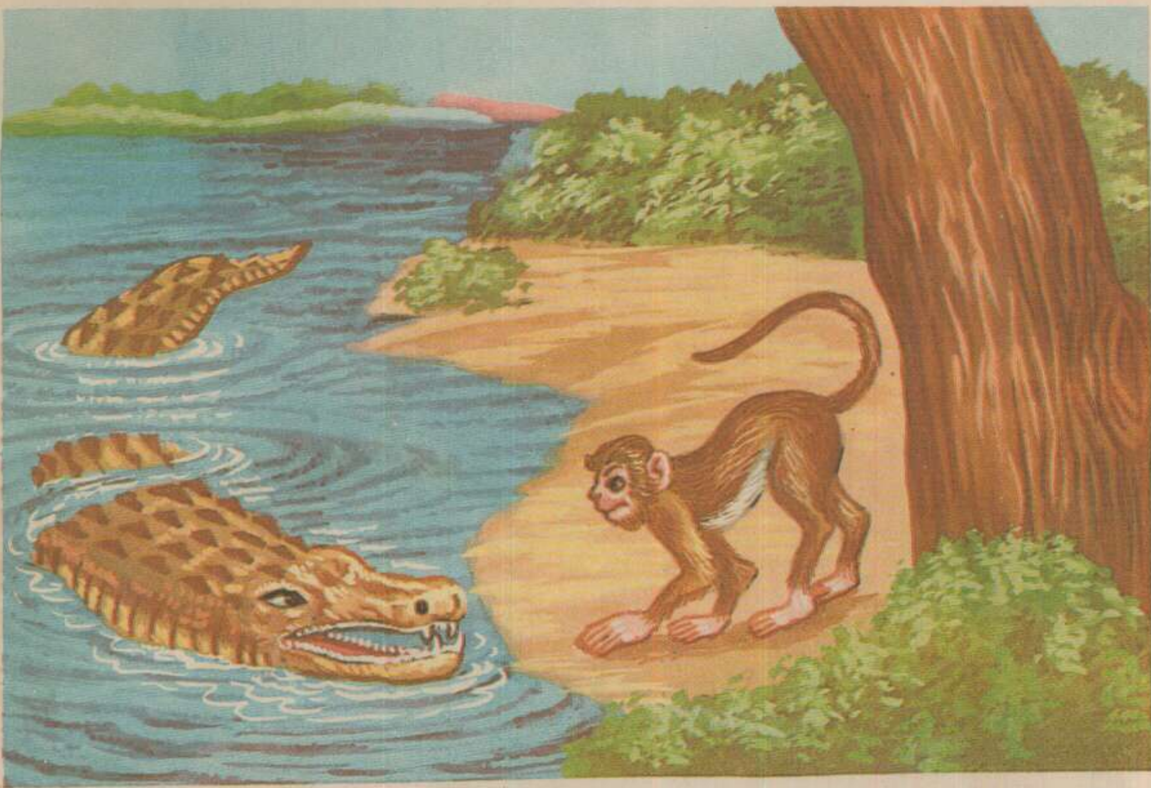


"लेकिन वह हमारे घर आयेगा कैसे, बहन ? उसे तैरना तो आता ही नहीं ।"

"उसका भी कोई न कोई उपाय निकल ही आयेगा, भैया ! तुम पहले निमंत्रण तो दे आओ ।"

लेकिन मगरमच्छ उसे फिर भी आमंत्रित करने नहीं गया । अपनी चाल असफल होती देखकर उसकी बहन ने एक छल-कपट का नाटक रचा । वह एक दिन बिमारी का बहाना करके लेट गई और बन्दर के कलेजे की माँग करने लगी ।

"अपने मित्र का कलेजा ! यह तुम क्या कह रही हो, बहन ? यह तो मित्र के साथ विश्वासघात होगा ? यह कैसे सम्भव हो सकता है ?"



"क्यों नहीं हो सकता ? मैं तुम्हारी बहन हूं । क्या अपनी बहन के लिए तुम इतना भी नहीं कर सकते ?" यह कहते ही उसने ज़ोर-ज़ोर से रोना शुरू कर दिया ।

मगरमच्छ बड़ी उलझन में फँस गया । वह करे तो क्या करे ? उसकी बहन बन्दर का कलेजा माँग रही थी पर उसका मन अपने दोस्त के साथ विश्वासघात करने को तैयार नहीं था । वह बोला, "बहन ! ज़रा सोच ! वह मेरा मित्र है । मैं उसकी जान कैसे ले सकता हूं ?"

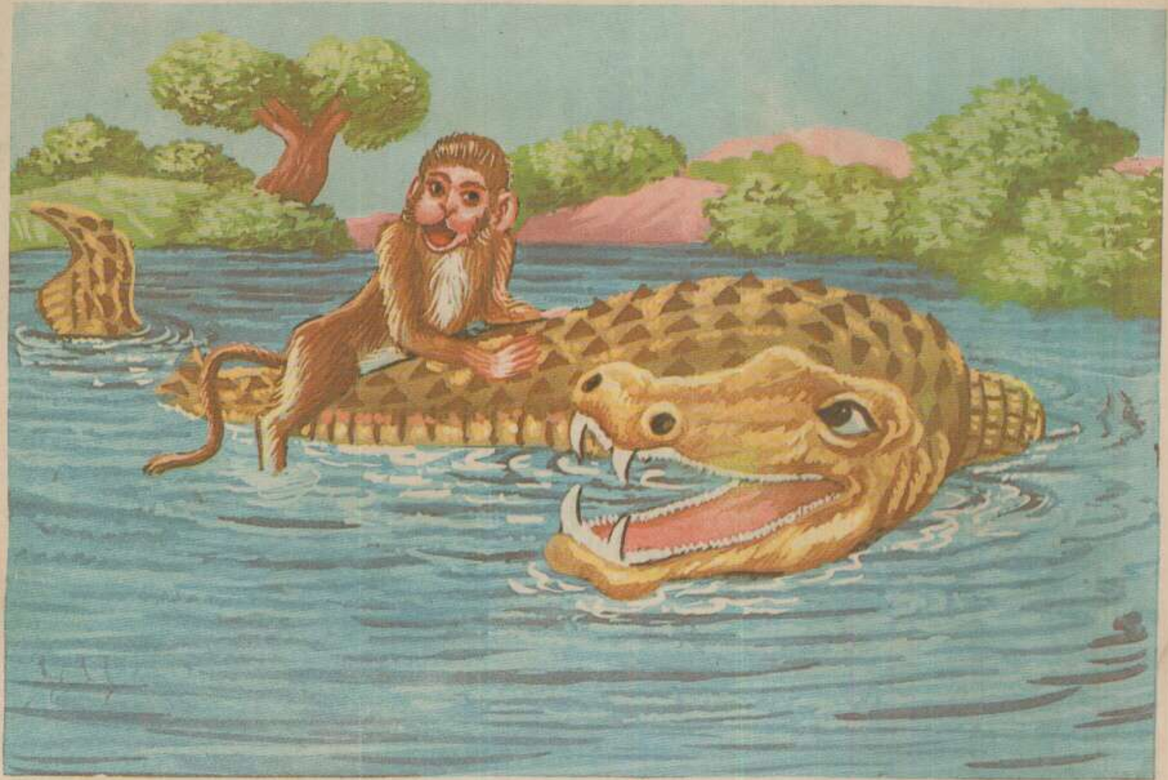
"इस बात से तुमको क्या फ़र्क पड़ेगा,भैया ? तुम मगरमच्छ हो । जीवों को मारकर अपना पेट भरना तुम्हारा धर्म है । तो फिर उस बन्दर को मारने से तुम्हें क्या पाप लगेगा ?"

मगरमच्छ ने अपनी बहन को बहुत समझाया पर वह अपनी ज़िद्द पर अड़ी रही । तब हार कर मगरमच्छ बन्दर को लाने के लिए चल पड़ा ।

उधर बन्दर भी मगरमच्छ की राह देख रहा था । इसलिए वह मगरमच्छ को देखते ही बोला, "आओ मित्र ! आज तुमने इतनी देर कहाँ लगा दी ?"

"क्या बताऊं मित्र ? एक बड़ी उलझन में फँस गया हूं । मेरी बहन बड़ी हठी है । वह तुमसे मिलने के लिए बहूत आतुर है । उसने कहा है, "अगर आज तुम अपने दोस्त को लेकर नहीं आये तो मैं अन्न-जल तक ग्रहण नहीं करेगी । अब तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूं ?"

"तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है, दोस्त ? यह तो खुशी की बात है कि मुझे अपनी बहन से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा । हाँ, एक परेशानी ज़रूर है ! मुझे तैरना तो आता ही नहीं ।"



"उसकी तुम चिन्ता न करो, मित्र । मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बिठा कर ले चलूंगा ।" इतना कहकर मगरमच्छ ने बन्दर को अपनी पीठ पर बिठाया और चल पड़ा मंझधार की ओर ।

मंझधार में पहुंच कर मगर गहरे पानी में डुबकी लगाने लगाने लगा । यह देखकर बन्दर घबरा गया और बोला, "अरे ! यह क्या कर रहे हो, मित्र ? यों तो मैं डूब जाऊंगा ।"

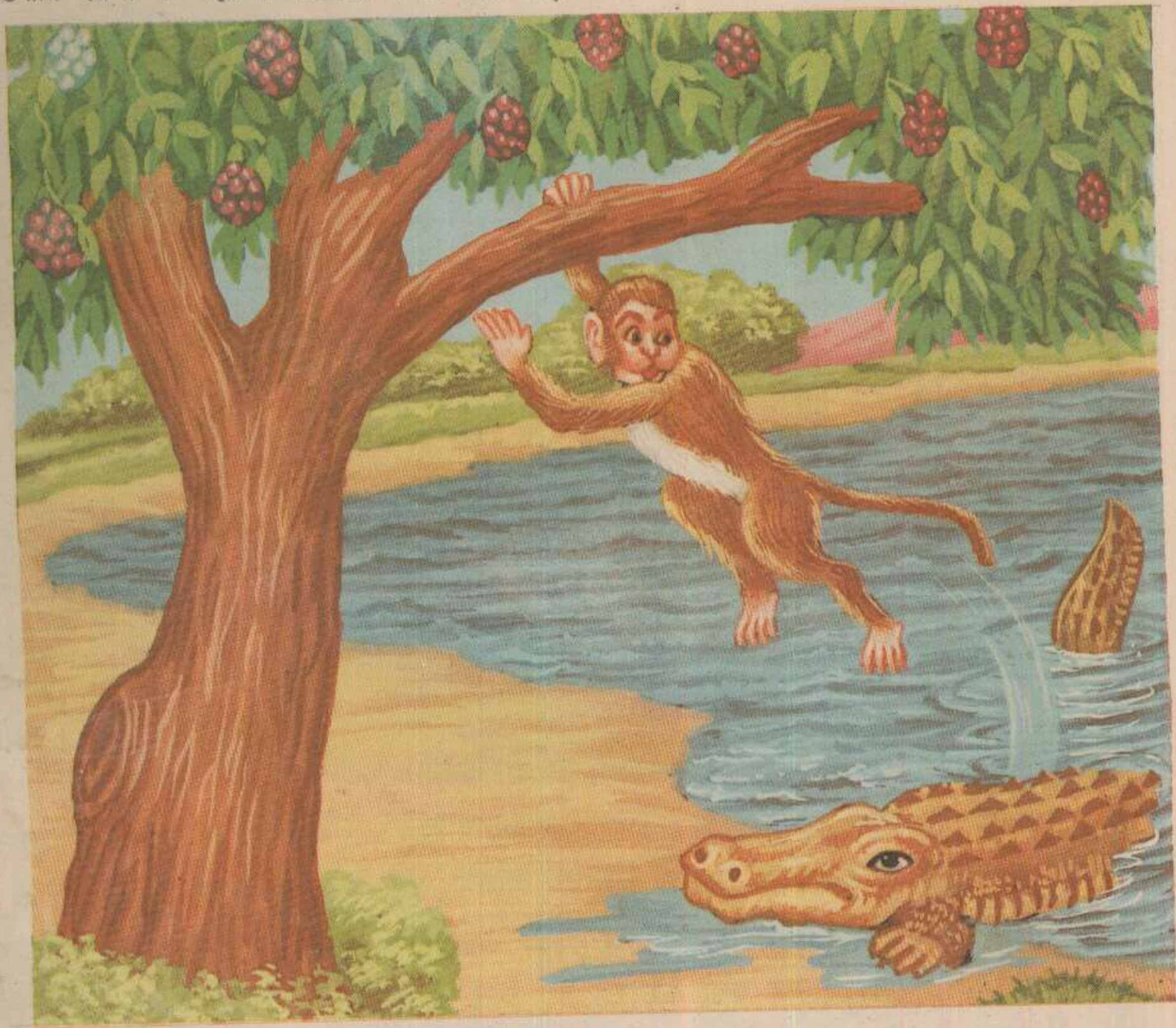
"अच्छा ही तो होगा । मैं तो तुम्हें पानी में डुबो कर मारने के लिए ही लाया हूं ।"

"क्यों ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम मुझे मारने पर तुले हुए हो ?" बन्दर ने आश्चर्य से पूछा ।

"तुमने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा, मित्र । लेकिन मेरी बहन इस समय सख़्त बीमार है । उसका कहना है कि अगर उसे किसी बन्दर का कलेजा नहीं मिला तो वह मर जायेगी ।"

बन्दर को मगरमच्छ के विश्वासघात से बड़ा धक्का लगा । वह सोचने लगा, "अब तो केवल चालाकी से ही काम लेना होगा ; तभी जान बच सकती है ।" यह सोचकर वह मगर से बोला, "यह तो मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात होती कि मेरा कलेजा मेरी बहन के काम आता । पर अफ़सोस इस बात का है कि यह बात तुमने मुझे पहले नहीं बताई, नहीं तो मैं पेड़ पर टँगे अपने कलेजे को उतार कर ले आता ।"

"तो फिर चलो । जल्दी से किनारे लौट चलें । वहां पहुंच कर तुम पेड़ पर टँगे अपने कलेजे को उतार लाना ।" इतना कहकर मगर लौट पड़ा ।



नदी के किनारे पर पहुंचते ही बन्दर तेज़ी से मगरमच्छ की पीठ से उतर कर पेड़ पर जा बैठा और बोल, "अरे मूर्ख शिरोमणि ! अब अपनी बहन के पास वापस लौट जा । उससे कहना कि तुम संसार में सबसे बड़े मूर्ख हो । मूर्खराज ! भला कोई जीव अपने शरीर से कलेजा भी निकाल कर रख सकता है ?"

मगरमच्छ अपनी मूर्खता पर पछताता हुआ वहां से लौट गया ।

शिक्षा – बच्चो ! मुसीबत के वक्त सदैव धैर्य से काम लेना चाहिए । बन्दर की तरह तुम्हें भी अपनी मुसीबत का सूझबूझ से सामना करना चाहिए । मगरमच्छ की तरह कभी भी छल-कपट नहीं करना चाहिए ।

आकर्षक सचित्र कहानियों की पुस्तकें

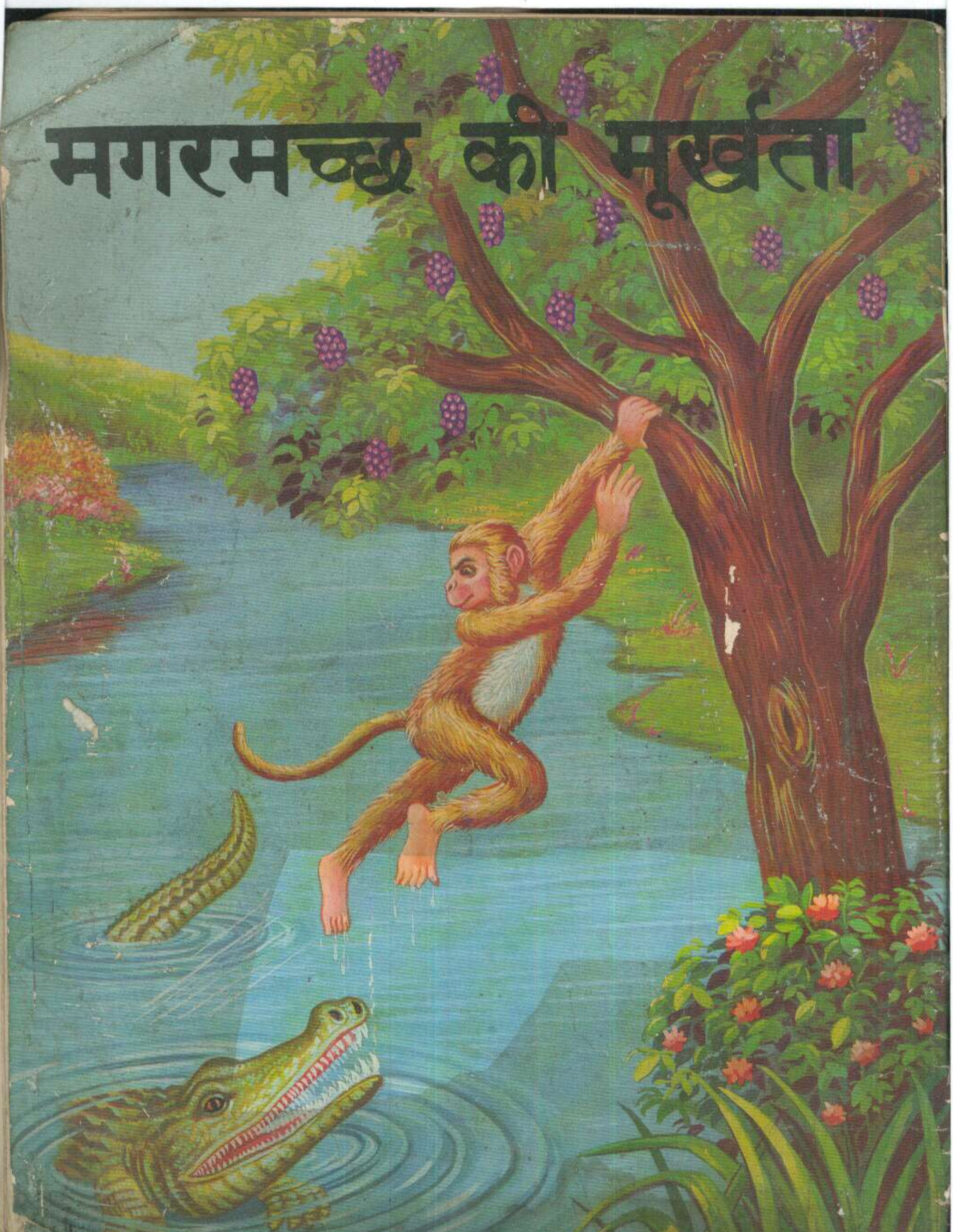
हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषाओं में उपलब्ध

पुस्तक संख्या	कहानियां
1	अलादीन और जादुई चिराग़
	गोपी ग्वालिन
2	नन्हा वीर सिपाही
	काठ का बालक सोनू
3	गुलीवर लिल्लीपुट में
	बेहोश राजकुमारी
4	रंगीला बंसी वाला
	जेकब और जूली
5	सिंदबाद जहाज़ी
	कछुआ और खरगोश
6	अली बाबा और चालीस चोर
	गधे की खाल
7	बौने फ़रिश्ते और जूतों का कारीगर
	सोने के अण्डे देने वाली मुर्ग़ी
8	राणा और उसका गधा
	नन्ही नीतू पाताल में
9	लालच का अवतार-राजा माहडास
	चांद की सैर
10	श्वेता और हेमा
	छुटकी ऋचा
11	चतुर बिल्ली
	भेड़िया और सात मेमन
12	बूढ़ा बाबा गुड़िया वाला
	नन्ही सुमन
13	जिम्मी बाजे वाला
	बड़े दिल वाली छोटी कुसुम
14	नन्ही सुचित्रा
	गिलहरियां और लकड़हारा
15	नन्ही जादूगरनी
	निडर बॉबी
16	सिण्डरेला
	चतुर अमित
17	नन्ही रीतु
	एक बार में सात शिकार
18	बदसूरत बतख़
	जादुई पौधा
19	ओज का जादूगर
	घमण्ड का सिर नीचा
20	राजकुमारी और मेंढ़क
21	घमण्डी चुहिया
	जलपरी का धरती पर आना
22	मारिया और शिकारी लड़का
	बौना टिकू
23	चार गायकों का कमाल
	मंगलवासियों की पृथ्वी-यात्रा
24	जादू की डिबिया
	नटखट हैरी
25	पीटर और उसके मित्र
	राजकुमारी और अग्निसर्प

पुस्तक संख्या	कहानियां
26	राजकुमारी और नरपशु
	बहादुर पैड्रो
27	काठ का घोड़ा
	हेलना और डायना
	मेंढकी और राजकुमार
28	जादुई छाता
	चीनी का अकाल
29	जादूगर कौवा
	बंदी राजकुमारी
30	बौना जब राजा बना
	ग्वालिन और उसका मित्र
	युद्ध या शांति
	बेघर बौना
	मुकद्दर का सिकन्दर
31	राजभक्त लकड़हारा
	लालची नवाब
	महाराजा का चुनाव
32	राजकुमारी और ढोल बजाने वाला
	कुरूप आदमी और राजकुमारी
	नताशा और जादूगर
	दयालु परीयाँ
33	दयालू हँस परी
	चतुर कुत्ता
34	बरगद का पेड़
	शरारती बौना
	चतुर टयुडर
	बूढ़ा जादूगर
	आलसी राजकुमारी
35	राजा और उसके नये वस्त्र
	बारह राजकुमारियाँ
	हँसों वाली लड़की
36	विक्रम और बेताल भाग 1
37	विक्रम और बेताल भाग 2
38	विक्रम और बेताल भाग 3
39	विक्रम और बेताल भाग 4
40	विक्रम और बेताल भाग 5
41	पंचतत्र की कहानियां भाग 1
42	पंचतत्र की कहानियां भाग 2
43	पंचतत्र की कहानियां भाग 3
44	पंचतत्र की कहानियां भाग 4
45	पंचतत्र की कहानियां भाग 5
46	पंचतत्र की कहानियां भाग 6
47	सिंहासन बत्तीसी भाग 1
48	सिंहासन बत्तीसी भाग 2
49	सिंहासन बत्तीसी भाग 3
50	सिंहासन बत्तीसी भाग 4
51	सिंहासन बत्तीसी भाग 5
52	सिंहासन बत्तीसी भाग 6
53	**रामायण भाग 1** (बाल काण्ड भाग 1)

पुस्तक संख्या	कहानियां
54	**रामायण भाग 2** (बाल काण्ड भाग 2)
55	**रामायण भाग 3** (अयोध्या काण्ड भाग 1)
56	**रामायण भाग 4** (अयोध्या काण्ड भाग 2)
57	**रामायण भाग 5** (अरण्य काण्ड)
58	**रामायण भाग 6** (किष्किंधा काण्ड)
59	**रामायण भाग 7** (सुन्दर काण्ड)
60	**रामायण भाग 8** (युद्ध काण्ड भाग 1)
61	**रामायण भाग 9** (युद्ध काण्ड भाग 2)
62	**रामायण भाग 10** (उत्तर काण्ड)
63	**रामायण भाग 11** (लवकुश काण्ड भाग 1)
64	**रामायण भाग 12** (लवकुश काण्ड भाग 2)
65	**ईसप की कहानियाँ** भाग 1 (लोमड़ी और सारस, अंगूर खट्टे हैं)
66	**ईसप की कहानियाँ** भाग 2 (कौवा चला हंस की चाल, प्यासा कौवा)
67	**ईसप की कहानियाँ** भाग 3 (सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी, चींटी और फाक्ता))
68	**ईसप की कहानियाँ** भाग 4 (हवा और सूरज, कौवा और लोमड़ी)
69	**ईसप की कहानियाँ** भाग 5 (भाई और बहन, बिल्ली के गले में घण्टी कौन बांधे)
70	**ईसप की कहानियाँ** भाग 6 (मेंढ़की और बैल, चकोरी के अण्डे)
71	**ईसप की कहानियाँ** भाग 7 (खोदा पहाड़ निकला चूहा, उल्ले शेखी)
72	**ईसप की कहानियाँ** भाग 8 (चमगादड़ की शामत, भोला बनमानस)
73	**ईसप की कहानियाँ** भाग 9 (दो भिखारी, बुद्धिमान बकरियां)
74	**ईसप की कहानियाँ** भाग 10 (बन्दर बांट, घमण्डी बारहसिंगा)
75	**भारतीय नैतिक कहानियाँ** भाग 1 (जल देवता का वरदान, मूर्तिकार की भूल)
76	**भारतीय नैतिक कहानियाँ** भाग 2 (मूर्ख विद्वान, हंसी बहुत मंहगी पड़ी)
77	**भारतीय नैतिक कहानियाँ** भाग 3 (बलिदान का फल वफादार मोती)
78	**भारतीय नैतिक कहानियाँ** भाग 4 (स्वर्ग का हाथी दया का फल)
79	**भारतीय नैतिक कहानियाँ** भाग 5 (घमण्डी पंडित मूर्ख की दुर्दशा)

पुस्तक संख्या	कहानियां
80	**बाइबल की कहानियाँ 1** (पुराना नियम) (सृष्टि का आरम्भ)
81	**बाइबल की कहानियाँ 2** (रिबैका की शादी)
82	**बाइबल की कहानियाँ 3** (महान स्वप्न दृष्टा जोसेफ)
83	**बाइबल की कहानियाँ 4** (जोनाह)
84	**बाइबल की कहानियाँ 5** (राज सोलेमन और शीबा की महारानी)
85	**बाइबल की कहानियाँ 6** (शेर की मांद में डेनियल)
86	**बाइबल की कहानियाँ 7** (नया नियम) (ईसा का जन्म)
87	**बाइबल की कहानियाँ 8** (ईसा मसी एक महान उपचारक)
88	**बाइबल की कहानियाँ 9** (स्वर्गारोहरण).
89	**बाइबल की कहानियाँ 10** (बेटे की वापसी)
90	**बाइबल की कहानियाँ 11** (ईसा मसीह का पुर्नजन्म)
91	**बाइबल की कहानियाँ 12** (पीटर की कहानी)
92	**श्री कृष्ण लीला भाग 1**
93	**श्री कृष्ण लीला भाग 2**
94	**श्री कृष्ण लीला भाग 3**
95	**श्री कृष्ण लीला भाग 4**
96	**महाभारत भाग 1**
97	**महाभारत भाग 2**
98	**महाभारत भाग 3**
99	**महाभारत भाग 4**
100	**महाभारत भाग 5**
101	**महाभारत भाग 6**
102	**महाभारत भाग 7**
103	**महाभारत भाग 8**
104	**महाभारत भाग 9**
105	**महाभारत भाग 10**
106	**महाभारत भाग 11**
107	**महाभारत भाग 12**


मगरमच्छ की मूर्खता